ईश्वर की कहानियाँ

विष्णु नागर

स्वर्ग में कुछ दिनों साफ-सफाई की व्यवस्था क्या गड़बड़ हुई कि वहाँ मच्छर पैदा हो गए।

स्वर्ग में ईश्वर के अलावा कोई था नहीं। लिहाज़ा, मच्छरों ने मजबूर होकर अपने जन्मदाता को ही अपना पालनहार बना लिया। अर्थात् वे ईश्वर का ही खून पीने लगे। ईश्वर चूँकि ईश्वर थे इसलिए उनका खून भी ईश्वरीय अर्थात् अत्यन्त सुस्वाद एवं तृप्तिकर था। मच्छर खूब मोटे होने लगे। कछुए की तरह सख्त और चिरायु भी होने लगे।

स्वर्ग कोई धरती तो था नहीं कि ईश्वर जब चाहे मार देते। स्वर्ग, स्वर्ग था और उसमें किसी को मारा नहीं जा सकता था। कुछ ईश्वरों ने चोरी-छुपे मारने की कोशिश भी की तो मच्छर मरे नहीं। वे भी ईश्वर की तरह अमर हो चुके थे। आखिर वे ईश्वर का खून रोज़ पी रहे थे।

स्थिति यह आ गई कि ईश्वर को सोचना पड़ा कि स्वर्ग में मच्छर रहें या ईश्वर। काफी बहस-मुबाहिसे के बाद तय हुआ कि ईश्वर स्वर्ग में नहीं रहेंगे, पृथ्वी पर रहेंगे। वहाँ मच्छरों को मारने की इजाज़त है और उन्हें भगाना भी आसान है।

विष्णु नागर: बचपन और छात्र जीवन शाजापुर, मध्य प्रदेश में बीता। सन् 1971 से दिल्ली में स्वतंत्र पत्रकारिता। *नवभारत टाइम्स* तथा *दैनिक हिंदुस्तान, कादंबिनी, नई दुनिया* और *शुक्रवार समाचार* साप्ताहिक से जुड़े रहे। भारतीय प्रेस परिषद के पूर्व सदस्य एवं महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा की कार्यकारिणी के पूर्व सदस्य। वर्तमान में स्वतंत्र लेखन।

चित्र: कैरन हैडॉक: शोधकर्ता, शिक्षिका, वैज्ञानिक, अध्यापिका और चित्रकार। उन्होंने अमेरिका में बायोफिज़िक्स में अपनी पीएच.डी. और पोस्टडॉक्टरल अध्ययन पूरा करने के बाद भारत में काम शुरू किया। अपने सभी प्रयासों में, उनका प्रमुख सरोकार समाज के वंचित वर्गों के प्रति रहा है, और वे सामाजिक परिवर्तन के लिए कला और विज्ञान शिक्षा - दोनों का उपयोग करती रही हैं।

यह कहानी हरियाणा राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा तैयार की गई विष्णु नागर की किताब *ईश्वर की कहानियाँ* से साभार।